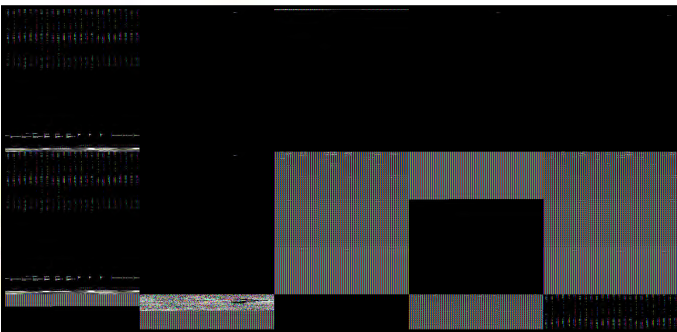
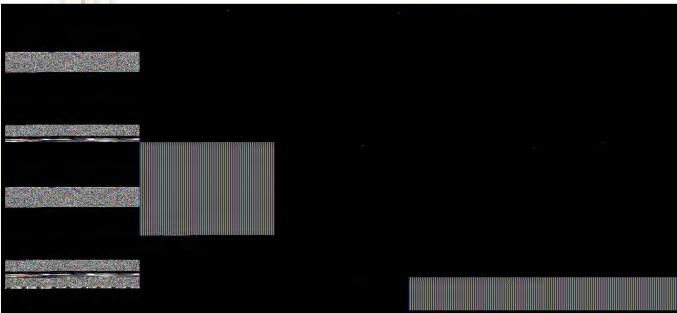
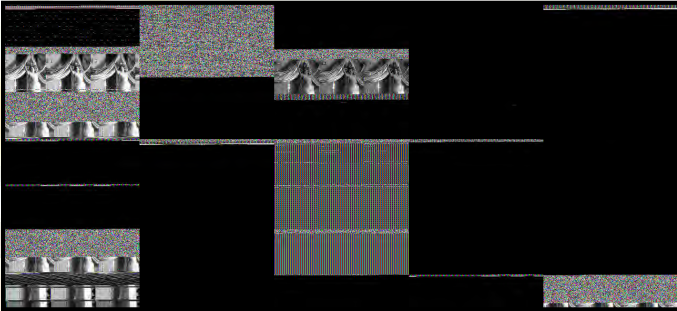


## “ जश्र- ए- फ़िराक़ ”

महान उर्दू कवि फ़िराक़ गोरखपुरी की 127 वीं वर्षगांठ पर जश्र-ए-फ़िराक़ का आयोजन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कार्यक्रम (27-28) के रूप में किया गया था जो 27 अगस्त को शुरू हुआ था। कार्यक्रम के दूसरे दिन यानी रविवार को जश्र-ए-फ़िराक़ की शुरुआत कवि सम्मेलन और मुशायरे से हुई। दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन शनिवार को कई बुद्धिजीवियों ने किया था जहां उन्होंने अपनी यादों और बातचीत के माध्यम से कवि को फिर से जीवंत किया था।



मुशायरे कवि सम्मेलन के कार्यक्रम की शुरुआत युवा कवियों जनार्दन, प्रदीप और मुबस्सिर फूलपुरी से हुई। अख्तर अजीज, ने कहा :

**"मिज़ाज गुप्तगू हर शख्स की हम छान लेते हैं, ज़रा सी देर में हम आदमी पहचान लेते हैं"**

लक्ष्मण एहसास ने अपनी प्रस्तुति में कहा :

**"ज़िन्दगी सिलसिला है भटकन का, पाओं से बांध कर सफर रखना" ।**

अशरफ अली बेग, बसंत त्रिपाठी, विनम्र सेन सिंह, अब्दुर्रहमान फैसल, जफरउल्लाह अंसारी जफर, ने भी अपने गजल और कविताएँ प्रस्तुत करीं। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण हरिश्वंर पांडे द्वारा "कछार कथा" और

"युद्ध" कविता की काव्यात्मक प्रस्तुति की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो राजेन्द्र कुमार ने करते हुए कहा

**"हम जो लिखते हैं दवातों को लहू देते हैं, कौन कहता है लिखने को कलम काफी है।"**

कवियों ने महिलाओं की स्थिति, राष्ट्रीय अखंडता, जीवन और इसकी चुनौतियों और कई अन्य विषयों से लेकर विभिन्न विषयों को छुआ। यह एक काव्यमय करने वाला वातावरण था जहां हवा जीवन के दर्शन और ज्ञान से भरी हुई थी। इसके बाद फिराक पर आधारित चुनिंदा वृत्तचित्रों की स्क्रीनिंग की गई। यह वास्तव में इस धरती के इस सपूत को एक उचित श्रद्धांजलि थी जिसने उर्दू शायरी में एक अमिट छाप छोड़ी है